

रिगोबर्टा मेन्चु (जन्म 1959)

ग्वाटेमाला के युद्धग्रस्त देश के बीच, एक युवा महिला ने खुद अपने और अपने लोगों के लिए एक बेहतर जीवन का सपना देखा. एक ऐसा जीवन जिसमें सभी लोगों के साथ - चाहें उनकी त्वचा के रंग, चाहें उनकी जातीय पृष्ठभूमि, या आर्थिक औकात कुछ भी हो उनके साथ उचित व्यवहार किया जायेगा. खाली बैठने के बजाय - रिगोबर्टा मेन्चु (मेन-चू) ने अपने सपने को कार्रवाई में बदला. अपने साथी लोगों के प्रति दया, सभी लोगों के साथ निष्पक्ष और समान व्यवहार की उनकी आस्था ने उन्हें दुनिया भर में मानवाधिकारों, मूल आदिवासी अधिकारों और सामाजिक न्याय की लड़ाई में अग्रणी बनाया.

ग्वाटेमाला में बढ़ते हुए

रिगोबर्टा मेन्चु का जन्म 9 जनवरी 1959 को ग्वाटेमाला के उत्तरी प्रांत एल क्विच (की-ची) के गांव चिमेल में हुआ था. एल क्विच का नाम मईच इंडियंस की एक शाखा के लिए रखा गया था, जो सदियों से उस क्षेत्र में रहते थे. क्विच लोग ज़मीन से अपनी आजीविका कमाते हैं इसलिए वे प्रकृति के बहुत सम्मान करते हैं. रिगोबर्टा के परिवार क्विच माया थे.

जब रिगोबर्टा एक छोटी लड़की थी, तो वह अपने परिवार के साथ ग्वाटेमाला के पश्चिमी तट पर चली गई. वहाँ, वे बड़े बागानों (प्लांटेशन्स) पर काम करने लगे. वे बागान बहुत धनी ज़मींदारों के थे. रिगोबर्टा और उस के परिवार ने फसलों कटाई में मदद की. कॉफी बीन्स और कपास काटते हुए, उन्होंने अनुभव किया की उनके परिवार का बागान मालिक शोषण कर रहे थे. उदाहरण के लिए, जब उसके छोटे भाई की मृत्यु हो गई, तो परिवार के लोग अंतिम संस्कार में शामिल हुए.



रिगोबर्टा मेन्चु मेक्सिको में स्वदेशी-इंडियन लोगों के साथ.

चूंकि उन्होंने उस दिन छुट्टी की सूचना नहीं दी, इसलिए मालिक ने उन सभी को नौकरी से निकाल दिया. उसने उन्हें उस हफ्ते के काम का कोई भुगतान भी नहीं किया. रिगोबर्टा को वो व्यवहार बहुत अन्यायपूर्ण लगा. वो अपने लोगों के हालात को बेहतर बनाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हो गई.

रिगोबर्टा के लिए त्रासदी

मेन्चुस की तरह ग्वाटेमाला के कई समूहों ने वर्षों से अनुचित व्यवहार का सामना किया. 1960 से 1996 तक देश एक गृहयुद्ध से गुज़रा. जब रिगोबर्टा एक बच्ची थी, तो कट्टरपंथी सैन्य बलों ने ग्वाटेमाला की सरकार को उखाड़ फेंका था. उसके बाद नए नेताओं ने स्वदेशी लोगों (मूल निवासियों) के खिलाफ एक क्रूर अभियान छेड़ दिया. 36 साल के संघर्ष में लगभग 200,000 लोग गायब हुए या मारे गए. मूल भारतीयों सहित कई ग्वाटेमेले के नागरिकों ने सैन्य अड्डों पर छापा मारा और सैन्य नेताओं को सत्ता से बाहर फेंकने की कोशिश की.

जब रिगोबर्टा किशोरावस्था में थे, तब कुछ सैन्य अधिकारियों ने माना कि उसका परिवार सत्ता पलटने वाले समूह का हिस्सा था. इस संदेह के कारण रिगोबर्टा के पिता, माँ और भाई को गिरफ्तार किया गया और अंत में मार डाला गया. रिगोबर्टा ने कभी भी हिंसा में भाग नहीं लिया, लेकिन वो ग्वाटेमाला के सैन्य नेतृत्व का विरोध करने वाले कई समूहों की सदस्य थी. उनके समूह ने किसानों को सेना के क्रूर कार्यों का विरोध करना सिखाया. बाद में, उसने खेतों और बागानों पर बेहतर काम करने की स्थिति बनाने के लिए शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किये.

लोगों के लिए शांति

रिगोबर्टा के माता-पिता और भाई की मृत्यु के बाद, उसे अपने जीवन के खिलाफ धमकी मिलने लगीं. सुरक्षा के लिए वह 1981 में मेक्सिको भाग गई. वहाँ रहते हुए, उसने ग्वाटेमाला के भारतीय लोगों की दुर्दशा, वहाँ की पीड़ा के बारे में दुनिया को बताया. 1982 में उन्होंने कठोर सैन्य सरकार के खिलाफ लोगों को एकजुट करने के उद्देश्य से यूनाइटेड रिप्रजेंटेशन ऑफ़ द ग्वाटेमाला विपक्ष (RUOG) नामक संगठन शुरू किया.

नोबेल शांति पुरुस्कार

1893 में स्थापना के बाद से केवल नौ महिलाओं ने नोबेल शांति पुरस्कार जीता है.
रिगोबर्टा मेन्चु उन नौ में से एक है.
रिगोबर्टा को उनके मूल देश ग्वाटेमाला में, शांति लाने के उनके प्रयासों के लिए बहुत सम्मान मिला, साथ में उन्होंने अमेरिका और पूरे विश्व में, स्वदेशी लोगों के लिए सामाजिक न्याय और समानता की मांग की.
1992 में उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार मिलने के समय उद्घोषक ने कहा : "आज, रिगोबर्टा मेन्चु अपने देश में, अमेरिकी महाद्वीप में और दुनिया में जातीय, सांस्कृतिक और सामाजिक विभाजन रेखाओं में शांति और सामंजस्य की एक उज्ज्वल प्रतीक हैं."

"जीवन में सपने देख पाना मेरे लिए सबसे महत्वपूर्णहै? जीवन के सबसे कठिन क्षणों और जटिल परिस्थितियों में भी एक और अधिक सुंदर भविष्य का सपना देख पाना."
—रिगोबर्टा मेन्चु

अगले साल रिगोबर्टा के जीवन की कहानी "आई रिगोबर्टा मेन्चु" नामक किताब में छपी. उसे वेनेजुएला की मानव-विज्ञानी एलिजाबेथ बर्गोस- डेब्राय ने लिखा. बर्गोस- डेब्राय ने रिगोबर्टा और उसके लोगों के संघर्षों की कहानी लिखी. "आई रिगोबर्टा मेन्चु" बहुत लोकप्रिय हुई और उसका 20 भाषाओं में अनुवाद हुआ. दुनिया भर में इस पुस्तक को पढ़ा गया.

रिगोबर्टा ने ग्वाटेमाला के लोगों को शांति और न्याय दिलाने में मदद का काम ज़ारी रखा. उनकी करुणा और कड़ी मेहनत को 1992 में, प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया.



नोबल पुरुस्कार विजेता रिगोबर्टा मेन्चु (1992) और कोफ़ी अन्नान (2001) एक साथ.

पुरस्कार देने वालों ने उनके मूल देश में महान संघर्ष और निराशा के समय में भी उनके हिंसा की ओर नहीं मुड़ने और राजनीतिक और सामाजिक माध्यम से उनके संघर्ष की प्रशंसा की. रिगोबर्टा ने सभी स्वदेशी लोगों की मदद करने के लिए रिगोबर्टा मेन्चु फाउंडेशन की स्थापना की. उसके लिए उन्होंने बारह लाख अमरीकी डॉलर की पुरस्कार राशि का उपयोग किया. उन्होंने ग्वाटेमाला में उन लोगों की वतन लौटने में मदद की जो रिगोबर्टा जैसे ही, देश से भाग गए थे.

1993 में, स्वदेशी लोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के दौरान, संयुक्त राष्ट्र ने रिगोबर्टा मेन्चु को अपना सद्भावना राजदूत नामित किया. आज भी वह मानव और सामाजिक अधिकारों के संघर्ष में सक्रिय हैं.

समय रेखा

1959 रिगोबर्टा मेन्चु का जन्म 9 जनवरी को ग्वाटेमाला के चिमेल में हुआ है.

1960 ग्वाटेमाला में गृहयुद्ध छिड़ गया.

1979 रिगोबर्टा गरीब किसान श्रमिकों के अधिकारों का समर्थन करने के लिए गठित एक समूह, किसान यूनियन की समिति में शामिल हुआ.

1981 रिगोबर्टा मौत के खतरों से बचने के लिए मैक्सिको भाग गया.

1983 रिगोबर्टा मेन्चु प्रकाशित हुआ है.

1992 रिगोबर्टा को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

1993 रिगोबर्टा को यूएन द्वारा सद्भावना राजदूत नामित किया गया.

1996 में ग्वाटेमाला की सरकार ने शांति संधि पर हस्ताक्षर किया, जिससे देश के 36 साल के गृहयुद्ध का अंत हो गया.